www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

विषय – इतिहास
कक्षा – 11वीं
प्रादर्श प्रश्न पत्र

समय 3 घंटे | पूर्णांक 100

निर्देश :–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनके अन्तर्गत एक वाक्य या एक शब्द में उत्तर वाले प्रश्न बहुविकल्पीय प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य असत्य एवं सही जोड़ी का मिलान वाले 5–5 प्रश्न रहेंगे।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर 25 अंक आवंटित है, प्रत्येक पर 1 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न पर 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्रमांक 20 एवं 21 प्रश्न के लिये 6 अंक निर्धारित है।
7. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या एक शब्द में दीजिए? 5

(अ) फ्रांसीसी क्रांति का अग्रदूत?
(ब) मुद्राराक्षस के लेखक?
(स) प्राचीन भूमध्य सागरीय बंदरगाह?
(द) मिस्र सभ्यता की लिपी?
(ड) रूस जिस संधि द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध से पृथक हुआ?

प्रश्न 2. दिये गये प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कर लिखिये? 5

(अ) सामांतवादी व्यवस्था में किसका स्थान सर्वोपरि होता था?
(अ) अर्ल ड्रयूक (ब) बैरन
(स) नाइट (द) राजा

(ब) विश्व के सात आश्चर्यो में से है?
(अ) हम्मुराबी की विधि संहिता (ब) मिस्र के पिरामिड
(स) जिगुरात (द) चीन की दीवार

(स) संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी कार्यालय कहां स्थित है?

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

(अ) न्यूयार्क (ब) हेग
(स) विएना (द) पेरिस

(द) नानकिंग संधि के परिणाम स्वरूप चीन ने इंग्लैण्ड को दिया?
(अ) कैण्टेन (ब) हांगकांग द्वीप
(स) फूचाओ (द) निंगपो

(ड) 18वीं सदी में पश्चिमी यूरोप के सभ्य मनुष्यों को अमेरिका के निवासी कैसे प्रतीत हुये?
(अ) सभ्य (ब) असभ्य
(स) जंगली (द) आधुनिक

प्रश्न 3. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द द्वारा कीजिए? 5

(अ) दूरबीन का अविष्कार.............ने किया था।
(ब) मध्यकाल में यूरोप से भारत जाने का जल मार्ग खोजने का श्रेय .... को है।
(स) 1453 ई. में ....पर तुर्की मुसलमानों ने अधिकार स्थापित कर लिया था।
(द) ....को 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति पुत्र कहा जाता है।
(ड़) रूसी साम्राज्य को ....कहने वाला निर्वासित रूसी क्रांतिकारी नेता लेनिन था।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों के समक्ष सत्य एवं असत्य अंकित कीजिए? 5

(अ) क्या आस्ट्रेलिया के आरम्भिक अंग्रेज, इंग्लैण्ड से निर्वासित हो कर आये फिर यही बस गये।
(ब) क्या प्रमुख ईसाई तीर्थस्थल जेरूसलम को सेलजुक तुर्की ने मुक्त कराने हेतु युरोपवासियों ने जो युद्ध छेड़ा वह 450 वर्षो तक चला।
(स) क्या कापर्निकस ने कहा कि पृथ्वी गोल है और सूर्य उसके चारों ओर घूमता है।
(द) क्या बार्थोलोमियो डियाज ने 1486 ई. में उत्तमांसा अंतरीय की खोज की थी।
(ड) क्या बाक्सर विद्रोही बंद मुठ्ठी को ही शक्ति का स्त्रोत मानते थे?

प्रश्न 5. स्तम्भ 'क' से 'ख' का मिलान कर सही जोड़ी बनाईये? 5

	क	ख
(अ)	सर आइजैक न्यूटन	विश्व के सात आश्चर्यो में एक
(ब)	माइकल ऐंजिलो	1688 ई की गौरवपूर्ण क्रान्ति
(स)	गीजा की मीनार	जर्मन सम्राट

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

(द) जेम्स द्वितीय — इटली का चित्रकार

(ड) कैसर विलियम द्वितीय — गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत

प्रश्न 6. कार्बन–14 विधि क्या है? इसकी उपयोगिता समझाइये? 4

अथवा

पुरा पाषाण काल एवं नवपाषाण काल के औजारों एवं भोजन सामग्री में अंतर बताइये?

प्रश्न 7. मध्यकालीन यूरोप के सामाजिक जीवन मे चर्च की क्या भूमिका रही। समझाइये? 4

अथवा

मध्यकालीन यूरोप की मैनर व्यवस्था पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न 8. औद्योगिक क्रांति के तत्कालीन ग्रामीण एवं नगरीय जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? स्पष्ट कीजिए? 4

अथवा

कृषि क्रान्ति के सकारात्क प्रभावों का वर्णन करें।

प्रश्न 9. कागजी विभाजन क्या है? स्पष्ट करें? 4

अथवा

प्रथम विश्व युद्ध में जापान की भूमिका क्या थी समझाइये?

प्रश्न 10. 'खासी' विद्रोह के महत्व पर प्रकाश डालिये? 4

अथवा

'नानकिंग संधि' की शर्तो का वर्णन करें।

प्रश्न 11. 1789 ई. की फ्रांस की क्रांति के विश्व पर क्या स्थायी प्रभाव पड़े? स्पष्ट कीजिए? 4

अथवा

1917 ई. की रूसी क्रांति के चार कारण बताएये।

प्रश्न 12. इंग्लैण्ड गौरवपूर्ण क्रांति के परिणामों का संक्षिप्त परिचय दीजिए? 4

अथवा

1848 की फ्रांसीसी क्रांति के क्या परिणाम हुये? विवेचना कीजिए?

प्रश्न 13. नवपाषाण युग में कृषि का अविष्कार एक महत्वपूर्ण विशेषता थी इस कथन की पुष्टी करें। 5

अथवा

मध्य पाषाण काल के मानव जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

प्रश्न 14. 14वीं शताब्दी के यूरोप में सामंतवाद की राजनीतिक एवं आर्थिक विशेषताओं का वर्णन करे। 5

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

अथवा

मध्यकालीन यूरोप में धर्म सुधार आंदोलनों के क्या प्रभाव हुये?

प्रश्न 15. यूरोप में रेनेसां (पूर्नजागरण) के कारणों की व्याख्या करें। 5

अथवा

समुद्रिक खोजों से संबंधित किन्ही चार नाविको एवं उनकी खोजो पर प्रकार डालिये?

प्रश्न 16. समाजवाद क्या है? इसका उदभव क्यों हुआ? 5

अथवा

औद्योगिक क्रांति का क्या अर्थ है? इसके किन्ही चार कारणों पर प्रकार डालिये?

प्रश्न 17. अफ्रो–एशियाई देशों पर यूरोपीय साम्राज्यवाद के नकारात्मक प्रभावों का वर्णन कीजिए? 5

अथवा

आर्थिक मंदी क्या थी? 1929 की आर्थिक मंदी के कारणों की विस्तृत विवेचना कीजिये।

प्रश्न 18. 'मुसोलिनो की गृह नीति' की विवेचना करें। 5

अथवा

प्रथम विश्व युद्ध के कोई पांच परिणामों का विस्तृत उल्लेख कीजिए?

प्रश्न 19. राष्ट्र संघ की असफलता के कारणों की व्याख्या करें। 5

अथवा

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय के कारणों की विवेचना करे।

प्रश्न 20. ''सम्राट अशोक विश्व के महानतम शासको में से एक है'' क्या आप इस कथन से सहमत है? कारण बताइये। 6

अथवा

पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व के यूनान की दास प्रथा का परिचय दीजिये?

प्रश्न 21. 'वर्साय की संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध के बीज विद्यमान थे'। कथन की पुष्टि कीजिए? 6

अथवा

संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रस्तावना, उद्‌देश्य एवं सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिए,

————————

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

विषय – इतिहास
कक्षा – 11वीं
आदर्श उत्तर

उत्तर 1. एक वाक्य या एक शब्द में उत्तर दीजिए।

(अ) जीन जेक्स रूसों
(ब) विशाखा दत्त
(स) सिकंदरिया
(द) हेरोम्लिफिक्स
(ड) ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन कर उत्तर लिखिए।

(अ) राजा
(ब) ;पपद्ध एवं ;पअद्ध
(स) न्यूर्याक
(द) हांगकांग
(ड) सभ्य

उत्तर 3. रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द द्वारा कीजिए।

(अ) गैलिलियों
(ब) वास्को द. गामा
(स) कुस्तंतूनिया
(द) नेपोलियन बोनार्पाट
(ड) राष्ट्रो का कारागार

उत्तर 4. निम्नलिखित कथनों में सत्य असत्य अंकित कीजिए।

(अ) सत्य
(ब) असत्य
(स) असत्य
(द) सत्य
(ड़) सत्य

उत्तर 5. सही जोड़ी का मिलान कीजिए।

(अ)	सर आइजैक न्यूटन	गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत
(ब)	माइकल ऐंजिलो	इटली का चित्रकार
(स)	गीजा की मीनार	विश्व के सात आश्चर्यो में एक

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

(द)	जेम्स द्वितीय	1688 ई की गौरवपूर्ण क्रान्ति
(ड)	कैसर विलियम द्वितीय	जर्मन सम्राट

उत्तर 6. कार्बन–14 नामक रेडियोधर्मी कार्बन सभी सजीव वस्तुओं में होता है। सजीव जिस मात्रा में इसे वायुमंडल से लेते है रेडियोधर्तिता के कारण उसी मात्रा में उसे खो भी देते है। मरणोपरांत, निर्जीव निश्चित मात्रा में इसे खोते जाते हैं। किसी वस्तु में निहित कार्बन–14 की मात्रा से उस वस्तु की तिथि निर्धारित होती है इसे कार्बन–14 विधि कहते है। तिथि निर्धारण में यह बहुत उपयोगी है।

अथवा

पुरा पाषाण काल	नव पाषाण काल
भोजन – कंद मूल, फल तथा मांस	कंद, मूल, फल तथा मांस के अतिरिक्त अनाज तथा दूध
औजार – कुल्हाडी, छैनी तथा खुरचनी	कुल्हाड़ी, हसिया तथा तीरकमान
हथियार भौंडे और मद्दे थे।	हथियारों को घिस कर घारदार बनाया जाता तथा पालिश भी की जाती थी।

उत्तर 7. मध्यकालीन यूरोप में चर्च की भूमिका महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसने धर्म, समाज तथा राजनीति को गंभीर रूप से प्रभावित किया था। चर्च के अधिकारी पोप धरती पर ईसा के प्रतिनिधी समझे जाते थे। राजा राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्र में पोप की आज्ञा मानने हेतु बाध्य था। पोप विवाह एवं धार्मिक क्रियाकलाप हेतु नियम बनाते थे, सदाचार और शिक्षा का प्रचार भी करते थे।

अथवा

सामंत की कृषि भूमि के मध्य टीले नुमा जमीन पर किलेनुमा रिहाइश को मैनर कहते थे। इस किले में सामंत का महल नौकरों एवं पालतू जानवरों की रहने की व्यवस्था होती थी। किले के भीतर खेती हेतु कुछ जमीन भी होती थी। सामंत के अधीनस्थ आक्रमण या महामारी की स्थिति में मैनर में शरण लेते थे। मैनरों में अनाज भंडारण की व्यवस्था थी। इस सामंत के पास कई मैनर होते थे।

उत्तर 8. औद्योगिक क्रांति के कारण गांवों का ह्रास हुआ और शहरों की वृद्धि हुई। शहरों में कारखाने में काम करने वाले मजदूरों की संख्या बढ़ी और दशा

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

खराब हुई, जनसंख्या में वृद्धि हुई, संयुक्त परिवार प्रथा टूट गई। कृषि की उन्नति हुई क्योंकि शहरों में रहने वाले अनाज के लिये पूर्णतः गांवों पर निर्भर थे। कृषि का विकास हुआ कच्चे माल की बढती खपत की पूर्ति उपयुक्त भूमि तैयार की गई।

अथवा

कृषि क्रांति का प्रभाव देश के किसानों की आय में बढोत्तरी हुई। कृषि के महत्व में वृद्धि हुई, धन धान्य से परिपूर्ण होने से लोगो की राजनीति में रूचि उत्पन्न हुई, किसानों का जीवन स्तर बेहतर हुआ। अब सभी भोजन में गेंहूं का उपयोग करने लगे, मांस का भी अधिक उपयोग होने से सामान्य जन के स्वास्थ्य में सुधार हुआ और जीवन विलासमय हो गया। खाद्य पदार्थो के व्यापार में वृद्धि हुई, नगरों में मण्डियां बन गई, राजकीय आय बढी पशुपालन में गुणात्मक सुधार हुआ।

उत्तर 9. अफ्रीका के क्षेत्रों पर यूरोपिय साम्राज्यवादी शक्तियों के दावों से संबंधित विवाद 1884–85 ई में यूरोप बर्लिन के सभाकक्षों में कागजों पर सुलझाया गया। इस सभा में अफ्रीकी देशों का कोई प्रतिनिधि नही था किन्तु वास्तविक विभाजन और उस पर अधिकार स्थापित करने की प्रतिक्रिया में बहुत लम्बा समय लगा, और इसे अक्सर बल प्रयोग द्वारा किया गया।

अथवा

प्रथम विश्व युद्ध ने जापान को अवसर दिया कि वह चीन में अपना आर्थिक व राजनीतिक साम्राज्यवाद बढा सकें। इसलिये जापान मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में सम्मिलित हो गया। चीनी तटस्थता को उपेक्षा करते हुय उसने जर्मन अधिकार वाले चीनी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। महायुद्ध के बाद जापान की सैनिक शक्ति में आशातीत वृद्धि हुई तथा प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में वह एक मात्र नौसैनिक महाशक्ति बन अमेरिका को सशंक्ति करने लगा।

उत्तर 10. इतिहास में खासी विद्रोह महत्वपूर्ण है– वह एक बहुत छोटे स्तर से शुरू हुआ और बढ़ते बढ़ते एक बड़े विद्रोह का रूप धारण कर लिया। इस विद्रोह से प्रेरणा पा कर सिंगफोस ने भी विद्रोह किया जिसमें अंग्रेजों के विरूद्ध बंदूको, भालों और तलवारों का खुल कर प्रयोग हुआ। इसी प्रकार कापश्चोर आकाश, नागर और कुकियों ने भी विद्रोह किया हांलाकि अंग्रेजो ने इसे दबा दिया किन्तु इन्होने देश भक्ति, स्वतंत्रताप्रेम और बलिदान की जो ज्योति जलाई वह अनेक क्रांतिकारियों के लिये प्रेरणा स्त्रोत बनी।

अथवा

नानकिंग की संधि 1842 ई की शर्ते :–

1. चीन ने हांगकांग का द्वीप अंग्रेजो के सुपुर्द कर दिया।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

2. 2 करोड़ 10 लाख डालर चीन ने युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में इंग्लैण्ड को दिये।
3. यदि कोई अंग्रेज चीनी कानून तोडेगा तो उस पर मुकदमा ब्रिटिश न्यायालय में ही चलेगा।
4. चीनी व्यापारियों के व्यापार का एकाधिकार समाप्त हुआ।
5. चीन में पांच बंदरगाह विदेशी व्यापार के लिये खोल दिये।

उत्तर 11. फ्रांस की 1789 ई की क्रांति के फलस्वरूप यूरोप में सामाजिक समानता के आधार पर समाज का पुर्नगठन हुआ। अनेक देशों से राजतंत्र का अंत हुआ और राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता स्थापित हुई। मानव अधिकारों का महत्व बढ़ा, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व की भावना का विकास हुआ। कृषक दासता का अंत हुआ और इटली एवं जर्मनी जैसे अनेक राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ।

अथवा

1917 ई की रूसी क्रांति के कारणः–

1. रूसी जनता जार के निरंकुश शासन से त्रस्त थी। इसका विस्फोट क्रांति के रूप में हुआ।
2. सामंत एवं नौकरशाही अत्यंत भ्रष्ट थी। आम जनता की परेशानियों को नजरंदाज कर वे कानून बनाते और लागू करते थे।
3. आर्थिक दुर्दशा के कारण मध्यम वर्ग में भी असंतोष था।
4. कार्ल मार्क्स के क्रांतिकारी विचार और प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव से 1917 ई में रूसी क्रांति हुई।

उत्तर 12. इतिहास में इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रांति का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसके फलस्वरूप निरंकुश शासन का अंत हुआ और संसदीय लोकतंत्र प्रारंभ हुआ, संसद की सर्वोच्चता को मान्यता मिल गई। संसद को चर्च का दायित्व सौंपा गया। वैदेशिक क्षेत्रों में इंग्लैण्ड को अपना खोया हुआ सम्मान वापस प्राप्त हुआ, इंग्लैण्ड व हॉलैण्ड के बीच मित्रता स्थापित हुई और फ्रांस व इंग्लैण्ड की मित्रता समाप्त हो गई।

अथवा

1848 ई. की फ्रांसीसी क्रांति के परिणामः– यह क्रांति सामान्य जनता के आक्रोश के कारण हुई इसके फलस्वरूप सैनिकवादी भावनाओं का उदय हुआ, निरंकुश शासन का अंत और वैधानिक शासन का विकास प्रारंभ हुआ। राष्ट्रीय भावनाओं, नवीन विचारों तथा क्रांति के सिद्धांतो का प्रचार हुआ जनसमूह की चेतना राष्ट्रीय चेतना बन गई और जनमत संपूर्ण जनता को

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

मिल गया। यूरोप के देशों में प्रजातंत्र, उदारवाद और समाजवाद का खूब विकास हुआ और तानाशाही शक्तियों को आधार पहुंचा।

उत्तर 13. नवीन पाषाण काल में शिकार के स्थान पर कृषि एक दृष्टि से मानव विकास के इतिहास की क्रांति थी। इस काल में मानव कृषि करने लगा था। संभवतः किसी प्राचीन मानव ने अनाज के दाने को मिट्टी के ढेर पर पड़ा देखा होगा और जल मिलने पर उस दाने को अंकुरित होते देखा होगा। बीज से पौधा कैसे उगा यह जानने के लिये जिस धैर्य और अवलोकन की आवश्यकता थी वह उस प्राचीन मानव में रही होगी। इस प्रकार मानव ने अन्न प्राप्त करने का विश्वसनीय तरीका ढूंढ निकाला था। गेहूं और जौ पैदा किया जाने वाला पहला अनाज था और कुत्ता बकरी और भेड पहले पालतू जानवर। किन्तु इस काल में भूमि की उर्वरता बढाने के बारे में मानव को ज्ञान नही था।

अथवा

मध्य पाषाण काल को आठ हजार ई.पू. से चार हजार ई.पू. तक माना जाता है। इस काल में मानव सामूहिक रूप से एक स्थान पर रहने लगा था। मकान बनाने की कला से अपरिचित थे परन्तु गुफाओं और झोपडियों में रहने के प्रमाण प्राप्त हुये है। भोजन में जानवरों का मांस मुख्य था जो शिकार द्वारा प्राप्त होता था। खाने में कंदमूल, फल तथा जंगली अनाज भी खाया जाता था। इस काल में गाय, बैल, भेड बकरी, भैंसे और घोडे पालने लगा था। अब तक कृषि का आरंभ नही हुआ था। इस काल में औजार अच्छे बनने लगे थे। तीरों के फल को लकडी की या हड्डी की डंडी में फंसा कर प्रयोग किया जाता था। इस काल में एक इंच लंबाई के हथियार भी बनाये जाते थे।

उत्तर 14. मध्ययुगीन राजनीतिक संगठन का मूलाधार सामंतवाद था। यह एक पिरामिडनुमा व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत राजा के अधीन सामंत स्वामिभक्त की शपथ लेते थे। राजा उन्हे कुछ भेंट देता और सामंत घुटने टेक कर ग्रहण करते थे। वे अपनी सेना सहित राजा की अवैतनिक सेवा हेतु उपस्थित होते थे, राजा को धन एवं आक्रमण काल में सहयोग प्रदान करते थे। राजा उन्हें प्रशासनिक दायित्व सौंप सकता था।

इस काल में गांव ही आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र था, मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। भूस्वामी राजा बड़े सामंतो के मध्य अपनी भूमि देता था वे छोटे सामंतो को और छोटे सामंत कृषकों को कृषि हेतु भूमि दिया करते थे। किसान सभी वर्गो के भोजन की व्यवस्था करता था।

अथवा

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

मध्यकालीन यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलनों के फलस्वरूप :–

1. ईसाई जगत की एकता का अंत हुआ– अब यूरोप में पोप एवं कैथोलिक धर्म की पूर्ण सत्ता खत्म हुई और नये सम्प्रदाय का उदय हुआ। लूथर, केल्विन एवं हेनरी सप्तम ने अलग चर्च की स्थापना कर ली।
2. सुदृढ़ राजतंत्रो का विकास हुआ – यूरोप के धर्म सुधार आन्दोलनों ने राजा की दैवीय शक्ति एवं निरंकुशता में वृद्धि की जिसे शासक धार्मिक मामलों के प्रधान बन गये। अतः राजाओं की शक्ति में वृद्धि हुई।
3. विविध सम्प्रदायों में आपसी सहयोग और उदारता का विकास हुआ नैतिक जीवन उन्नत हुआ और धर्म व्यक्तिगत विषय बन गये।
4. बाइबल अनुवाद अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ – धार्मिक साहित्य के साथ शिक्षा में उल्लेखनीय विकास हुआ।
5. अब लोग भौतिक जीवन की ओर आकृर्षित हुये।
6. राष्ट्रीयता का विकास हुआ।
7. पूंजीवाद का विकास हुआ।

उत्तर 15. यूरोप में रेनेसा (पुनर्जागरण) के कारण निम्नलिखित थे :–

1. तुर्को का कुस्तुंतुनिया पर अधिकार :– 1453 ई. में ऑटोमन तुर्को ने कुस्तुंतुनिया पर अधिकार कर लिया। तुर्को ने यहां के निवासियों पर अत्याचार किये। अनेक विद्वानों को मौत के घाटर उतार दिया। तुर्को के अत्याचारों तथा लूटमार से अपने आप को सुरक्षित रखने के लिये वहां के लोग यूरोप के अन्य देशों विशेषकर इटली में आकर बस गये। वहां वे यूरोपीय विद्धानों के सम्पर्क में आये तथा कई साहित्यकारों तथा स्थानीय विद्वानों को उन्होने अपनी विद्वता से प्रभावित किया। इससे एक नई विचारधारा का विकास हुआ। इससे रोम शिक्षा तथा साहित्य का केन्द्र बन गया।
2. **धर्मयुद्धः**– यूरोप में मध्य युग धर्मयुद्धों का काल था। इन धर्मयुद्धो के कारण यूरोप के निवासियों का संपर्क अनेक नवीन जातियों से हुआ, जिससे उनका भौगोलिक ज्ञान और रहन सहन प्रभावित हुआ। पोप तथा यूरोप के सम्राटों के मध्य होने वाले धार्मिक संघर्ष के कारण जनसाधारण ने धर्म के क्षेत्र में विचार–विमर्श प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि कागज, रूई तथा बारूद का आविष्कार धर्मयुद्ध के कारण ही हुआ था। इससे स्पष्ट है कि धर्मयुद्धों ने पुनर्जागरण को प्रोत्साहन दिया।
3. **नगरों का विकास** :– व्यापार में वृद्धि के कारण नगरों का विकास हुआ। नगर व्यापार के प्रमुख केन्द्र बन गये। व्यापारियों तथा सामन्तों के बीच

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

संघर्ष की स्थिति पैदा हुई। सामन्त लोग अपने स्वार्थ के लिये पुरानी शोषण की व्यवस्था को बनाने रखना चाहते थे, किन्तु नगरों में व्यापारियों का वर्चस्व होने के कारण वे ऐसा नही कर सके। नगरों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना प्रबल हुई। इससे सामन्तों के अधिकारों पर प्रहार हुआ। इससे सामन्ती व्यवस्था का पतन हुआ और पुनर्जागरण को बल मिला।

4. **छापेखाने का आविष्कार** :— 1640 ई. में गुटनबर्ग नामक व्यक्ति ने जर्मनी में सबसे पहले छापेखाने का आविष्कार किया और 1476 ई में कैक्टन ने इंग्लैण्ड में छापेखाने के प्रयोग को जारी रखा। छापेखाने की खोज से शिक्षा के विकास में विशेष योगदान मिला, क्योंकि इस आविष्कार के बाद पुस्तकों का अभाव नहीं रहा। अब विद्वान विषय के चिंतन तथा मनन के साथ—साथ उनका आलोचनात्मक अध्ययन भी करने लगे। इससे पुनर्जागरण को प्रोत्साहन मिला।
5. **भौगोलिक खोजे** :— भौगोलिक खोजों ने भी पुनर्जागरण को प्रोत्साहन दिया। कोलम्बस ने अमेरिका की तथा वास्कोडिगामा ने भारत की खोज की। इस प्रकार से बहादुर व्यक्तियों ने आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका की खोज की। नवीन देशों की खोज के परिणामस्वरूप न केवल खोजकर्ताओं को इन क्षेत्रों में व्यापार करने का प्रोत्साहन मिला, अपितु उन उपनिवेशों में उन्होनें अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार भी किया। दूर—दूर तक यात्राएं करके इन साहसी यात्रियों ने अनेक अनुभव प्राप्त किये तथा नवीन ज्ञान एवं विचारों के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
6. **मानववाद का प्रचार** :— मानववाद वह विचार प्रवाह है, जिसका केन्द्र बिन्दु मानव है, मानव का हित है। मानववादी विद्वानों ने प्राचीन ग्रंथों की खोज के कार्यो को अत्यन्त लगन तथा उत्साह के साथ प्रारंभ किया। इससे लोगो में उत्सुकता, तार्किक दृष्टिकोण तथा ज्ञान में वृद्धि हुई। इसने यूरोप के बौद्धिक वातावरण को पूर्णतया प्रभावित किया। फ्लोरेंस मानववादी आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र था, क्योंकि यहां दान्ते, पैट्रार्क आदि मानववादी विद्वान रहते थे। मानवाद ने पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(किन्ही पांच पर विस्तार अपेक्षित है।)

अथवा

1. अफ्रीका के तटीय मार्ग की खोज पुर्तगालियों ने की। इन्होने जहाज से 3200 कि.मि. की यात्रा करके इस मार्ग का पता लगाया और अफ्रीका के पश्चिमी तट पर पुर्तगाली उपनिवेश स्थापित किये।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

2. बार्थोलोमियों डियाज ने 1486 ई. में उत्तमांसा अंतरीय की खोज की। यह दक्षिणी अफ्रीका में है। वह यहां से भारत पहुंचना चाहता था पर सफल नही हुआ।
3. पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा 1498 ई में आशा अंतरीय का चक्कर लगाकर भारत पहुंचा । वहां पुर्तगाली बस्तियां बसाई। इस खोज के फलस्वरूप भारत और यूरोप के बीच नये सिरे से सीधा व्यापार शुरू हुआ।
4. कोलंबस ने 1492 ई में तीन छोटे जहाज लेकर अटलांटिक समुद्र की यात्रा की। वह भी भारत की खोज में निकला था। तीन महीने की कठिन यात्रा के बाद वह अटलांटिक महासागर में स्थित एक महाद्वीप में पहुंचा। उसने आगे आने वाले नागरिकों को अमेरिका आने का रास्ता दिखाया।

उत्तर 16. समाजवाद क्या है :–

समाजवाद का विचार पूंजीवाद की बुराईयों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। इस विचार में मजदूरों को खासतौर से प्रभावित किया। अपने संघर्षों के जरिये अपनी जीवन दशा सुधारने के लिए इन लोगों ने काफी कुछ हासिल किया। बहरहाल उनको विश्वास हो गया कि उनकी जिन्दगी में बुनियादी सुधार के लिए समाजवाद अथवा समाज की पुनर्व्यवस्था अति आवश्यक है। अनके दार्शनिकों, विद्वानों और विचारको ने भी श्रमिको और पूंजीपतियों के वर्ग संघर्ष के निराकरण के लिए श्रमिको की आर्थिक और सामाजिक दशा सुधारने के लिए तथा उनकी श्रम संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए चिन्तन–मनन करके अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किये। इन्ही श्रेष्ठ विचारों और सिद्धान्तों को समाजवाद कहा गया।

समाजवाद का उदभव निम्नलिखित कारणों से हुआ :–

समाजवाद का उद्‌देश्य श्रमिको के कल्याण के लिए कार्य करना और नवीन ढंग से ऐसे समाज की रचना करना, जिसमें वर्ग संघर्ष, नहीं हो, जिसमें उत्पादन के साधनों पर जनता का सामूहिक अधिकार हो और धन का वितरण न्याय और समानता के आधार पर हो। समाजवाद, पूंजीवाद के विरूद्ध एक संघर्ष रहा है। रॉबर्ट ओवन, सेण्ट साइमन फडीनेण्ड लेसल, लुई ब्लांक, कार्लमार्क्स आदि ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा मजदूरों के हित एवं कल्याण पर जोर दिया। समाजवाद मशीनों, कारखानों का विरोधी नही है वरन् सामाजिक असमानता का विरोधी है। वह पूंजीवाद से उत्पन्न खामियों को दूर करने की वकालत करता है लेकिन इस क्षेत्र में बहुत सी समस्याएं अभी भी है। ये अनसुलझी समस्याएं सभी राष्ट्रो के लिये चुनौती है।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

अथवा

औद्योगिक क्रांति का अर्थ इस प्रकार है :–

ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति शब्द का प्रयोग दार्शनिक तथा अर्थशास्त्री आरनॉल्ड ऑयनबी द्वारा उन परिवर्तनों का वर्णन करने के लिये किया गया जो ब्रिटेन के औद्योगिक विकास में 1780 और 1820 ई के बीच हुए थे। 1780 के दशक से 1820 ई. के दौरान ब्रिटेन में कपास लौह उद्योग, कोयला खनन, सडको तथा नहरों का निर्माण तथा विदेशी व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इसी को औद्योगिक क्रांति का नाम दिया गया।

ब्रिटेन में औद्योगिक विकास का यह चरण नयी मशीन तथा तकनीकियों से जुड़ा है। ब्रिटेन में बड़े–बड़े उद्योग की स्थापना की गई। उद्योगों में शक्ति के एक नये स्त्रोत के रूप में भाप का व्यापक रूप में प्रयोग होने लगा। इसके प्रयोग से, जहाजों तथा रेलगाडियों द्वारा परिवहन की गति तेज हो गयी। उद्योगों मे माल भारी मात्रा में बनने लगा इसको बेचने के लिये इंग्लैण्ड के पास विदेशी बाजार था। इस क्रांति का प्रसार ब्रिटेन से दूसरे देशों में हुआ।

औद्योगिक क्रांति के कारणः–

1. विदेशी बाजारों की पूर्ति के लिये अधिक माल की आवश्यकता– आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोप के लोगो ने अमेरिका का पता लगा लिया था और एशिया के लिये नये समुद्री मार्ग खोज निकाले थे। इससे व्यापार में वृद्धि हुई। बढ़ते हुए व्यापार के लिये आवश्यक था कि नये बाजारों की मांग को पूरा करने के लिये यूरोप के देशों के पास अधिक से अधिक माल बेचने को हो। किन्तु उन दिनों ब्रिटेन कारीगरी में एशिया के देशों के मुकाबले में पिछडा हुआ था। इसलिये पुराने औजारों और उत्पादन के तरीकों से ब्रिटेन के लोगो में औजारों तथा उत्पादन के तरीको में उन्नति करने की इच्छा उत्पन्न हुई।
2. विशाल पूंजी की उपलब्धि :– नये औजारो को बनाने बड़े बडे कारखाने स्थापित करने और बड़े पैमाने पर माल उत्पन्न करने के लिये अधिक धन की आवश्यकता थी। ब्रिटेन में इस आवश्यकता की पूर्ति भी हो गई थी। 1757 ई. में ब्रिटेन की ईस्ट इण्डिया कंपनी ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराकर बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के तीन सूबों पर अपना अधिकार जमा लिया था। उसके बाद कंपनी के लोगो ने व्यापार के नाम पर तथा दूसरे तरीको से उन तीनों सूबों की खुली लूट की और करोडो रूपया लूटकर ले गये। इससे इंग्लैण्ड में अपार धन जमा हो गया। इससे वहां के व्यापारी नये आविष्कारों में

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

अधिक से अधिक धन खर्च कर सकते थे। इस सब कारणों ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया।

3. सस्ते मजदूरों की प्राप्ति :– उस समय सस्ते मजदूर इंग्लैण्ड में पर्याप्त संख्या में मिल जाते थे क्योंकि कृषि दासता समाप्त हो चुकी थी। कृषक अपनी स्वेच्छा से कहीं भी काम कर सकते थे। बाड़ाबन्दी (खेती को बाडे के द्वारा घेरना) आन्दोलन के कारण अनके छोटे–छोटे किसान बेदखल हो गये थे। इसके परिणामस्वरूप भूमिहीन बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई। इससे कारखाने में काम करने के लिये सस्ते मजदूर पर्याप्त संख्या में मिलने लगे।
4. कच्चे माल की प्राप्ति :– ब्रिटेन को कच्चा माल उपनिवेशों से प्राप्त हो जाता था। इंग्लैण्ड में उद्योग धन्धों एवं कारखानों के लिये कच्चे माल की कमी नहीं थी। कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में था।

उत्तर 17. साम्राज्यवाद एक बहुत बड़ा अभिशाप था। विशेषकर एशिया और अफ्रीका के लोगो के लिए। अधिकांश अफ्रो–एशियाई राष्ट्र लम्बे समय तक औपनिवेशिक (साम्राज्यवादी) शासन के अधीन रहें तथा उन्होनें बहुत ज्यादा हानि उठाई। यद्यपि अब व्यावहारिक रूप से दुनिया के अधिकांश राष्ट्र उपनिवेशवाद से मुक्त है तथापि इसके जो बुरे प्रभाव एशिया तथा अफ्रीका के लोगो पर विशेषकर पड़े, वे आज भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते है।

साम्राज्यवाद के जो नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़े उनका निम्नलिखित रूप से वर्णन किया जा सकता है।

साम्राज्यवाद के नकारात्मक प्रभाव (दुष्परिणाम)

साम्राज्यवाद के अधिकतर प्रभाव नकारात्मक एवं दर्दनाक थे –

1. **स्वतंत्रता की समाप्ति** :– विश्व का एक विशाल भाग, विशेषकर एशिया एवं अफ्रीका यूरोपियन लोगों एवं अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा उपनिवेश बना लिया गया। साम्राज्यवादियों ने यहां की जनता पर खुलकर अत्याचार किए। उनको सभी प्रकार के राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर दिया और उनके संघर्षो के मार्गो को बन्द कर दिया। जनता में सर्वत्र विवशता की भावना छा गई और गुलामी की मनोवृत्ति ने उन्हें जकड़ लिया। उनका स्वाधीनता प्रेम नष्ट हो गया और गुलामी से ही प्रेम करने लगे।
2. **आर्थिक शोषण** :– उपनिवेशों के विशाल संसाधनों का साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बड़ी बेरहमी से शोषण किया गया। उन्होने स्थानीय उद्योगों को बर्बाद कर दिया।

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

उदाहरणस्वरूप :– ब्रिटेन ने भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत के विश्व विख्यात वस्त्र उद्योग को बर्बाद कर दिया। उन्होने खाद्यान्न फसलों के स्थान पर औद्योगिक अथवा बागान फसलें उत्पन्न करके कृषि ढांचे को बदल दिया। ऐसा उन्होने अपने औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया। वे अपने उपनिवेशों के व्यापार पर भी पूर्ण एकाधिकार रखते थे।

3. **बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन** :– यूरोपीय साम्राज्यवादी देश ईसाई धर्म के मानने वाले है। उन्होने साम्राज्य स्थापना के साथ–साथ अपने उपनिवेश की जनता का धर्म परिवर्तन भी किया बडे पैमाने पर उन्हें ईसाई बनाया। इसके लिए उन्होने अच्छे बुरे उपाय अपनाये। यही कारण है कि आज इन राष्ट्रो में बड़ी संख्या में ईसाई विद्यमान है।

4. **जातीय भेदभाव एवं अहंकार** :– साम्राज्यवाद ने जातीय भेद–भाव को बढावा दिया। साम्राज्यवादी देश स्वयं को अपने उपनिवेश के लोगों से श्रेष्ठतर समझते थे और इसलिए वे उनसे घुल–मिलकर नहीं रहते थे। जातीय भेद भाव का सबसे बुरा रूप था जातीय पृथकतावाद अर्थात दक्षिण अफ्रीका में जो जातीय पृथकतावाद (रंगभेद की नीति) सामने आया था। उनके साथ पशुओं के समान अथवा दासो के समान व्यवहार किया गया।

5. **उपनिवेशो को संस्कृतियों का विनाश** :– विदेशी साम्राज्यवादियों ने अपने उपनिवेशों में स्थायी रूप से शासन करने के लिए आवश्यक समझा कि धीरे–धीरे उनकी संस्कृतियां नष्ट कर दी जायें। इसके लिए योजनापूर्वक ढंग से प्रयास किये गये। विदेशी भाषा, सभ्यता व संस्कृति का गुणगान किया गया तथा उनकी अपनी भाषा सभ्यता एवं संस्कृति को देय, त्याज्य व पुरातनवादी कहकर निंदा की गई। विदेशी भाषा के प्रसार से तथा धर्म परिवर्तन के माध्यम से धीरे–धीरे उपनिवेशों की जनता अपने स्वामियों की सभ्यता व संस्कृति को श्रेष्ठ समझने लगी और उनकी जीवन पद्धति का अनुसरण करने में गौरव का अनुभव करने लगी। परिणामस्वरूप गुलाम राष्ट्रो की संस्कृतियां नष्ट होने लगी।

6. **अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष, विनाश एवं युद्ध** :– यूरोप के प्रत्येक साम्राज्यवादी देश संसार भर में अधिकाधिक क्षेत्रों को गुलाम बनाकर अथवा संरक्षित देश बनाकर उनका शोषण करना चाहते थे। यूरोपीय राष्ट्रो में साम्राज्य विस्तार की होड़ सी लग गई। साम्राज्य विस्तार हेतु उनके स्वार्थ आपस में टकराने लगे थे। फलस्वरूप उनके मध्य अनेक बार युद्ध हुए और कई बार पारस्परिक समझौते से वे युद्ध को टाल भी दिये, किन्तु अन्त में यूरोपिय साम्राज्यवादी देश दो गुटो में बंट गये और प्रथम व द्वितीय विश्व युद्धो के कारण भी बने।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

7. **कच्चे माल की लूट** :– यूरोप के साम्राज्यवादी देशों को अपने कारखाने चलाने के लिए बड़ी मात्रा में कच्चे माल की आवश्यकता थी। यह माल उन्होने बहुत सस्ते मूल्य पर अपने अधीन एशियाई देशों से प्राप्त किया और बने हुए माल को एशियाई बाजारों में भेजते थे। इस प्रकार उनकी दुहरी लूट होती थी।

(किन्ही पांच बिन्दुओं का उत्तर देने पर अंक दिये जायें)

अथवा

आर्थिक मंदी का अर्थ :– 1929 ई. में विश्वव्यापीी मंदी का दौर आरम्भ हुआ जिसने अमेरिका तथा सम्पूर्ण यूरोप को अपनी परिधि में ले लिया। इसका प्रभाव एशिया तथा अफ्रीका पर भी पड़ा यह एक प्रकार से विश्वव्यापी मंदी थी। अब प्रश्न उठता है कि आर्थिक मंदी क्या है? जब किसी देश में उत्पादन तो तीव्रता से होती है, किन्तु जनता की क्रय शक्ति नष्ट हो जाती है, वस्तुओं की कीमतें गिरने लग जाती है तथा बैंके भुगतान नही कर पाती, मजदूरों की मजदूरी मिलना बंद हो जाती है। बाजार विभिन्न वस्तुओं से भरे रहते है किन्तु खरीददार दिखाई नही देते तब इस स्थिति को आर्थिक मंदी कहते है।

1929 ई. में आर्थिक महामंदी आरंभ हुई। उसने संयुक्त राज्य अमेरिका को बुरी तरह ग्रसित कर लिया था। अमेरिका के अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठान बंद हो गये थे। जिससे लाखों अमरीकी बेरोजगार हो गये। 1932 ई में जर्मनी ने घोषणा कर दी कि वह क्षतिपूर्ति की राशि नही चुकायेगा। उस समय जर्मनी में साठ लाख लोग बेरोजगार हो गये। संपूर्ण देश में व्यापक दरिद्रता छा गयी। ब्रिटेन में भी बेरोजगारी का व्यापक असर पड़ा। यहां पर लगभग 30 लाख लोग बेरोजगार हो गये। यूरोप के प्रत्येक देश ने विदेशों से आयात पर रोक लगा दी, जिससे उनकी अर्थव्यवस्था को गहरा आघात लगा।

1929 की आर्थिक मंदी के कारण निम्नलिखित है :–

1. **प्रथम विश्व युद्ध** – प्रथम विश्व युद्ध ने आर्थिक मंदी को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया। जब युद्ध छिड़ा उस समय सैनिक आवश्यकताओं की मांग बढी तथा उद्योग धन्धों का भी विस्तार हुआ। अनेक लोग सेना में भर्ती हुए। युद्ध काल में मजदूरी की दर बढ़ी तथा मुनाफा व रोजगार में वृद्धि हुई। किंतु युद्ध में लाखों लोग मारे गये, सस्ते माल से बाजार पट गये किन्तु उस माल को खरीदने वाले

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

बहुत कम लोग थे, लोगो की क्रय शक्ति गिर गयी, बेरोजगारी में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप आर्थिक मंदी पैदा हो गयी।

2. **उद्योगो का यंत्रीकरण** – युद्ध काल में स्वचालित यंत्रो का प्रयोग हुआ। मजदूरों की जगह स्वचालित यंत्रों के प्रयोग से श्रमिको में बेकारी फैली। परिणामस्वरूप उनकी क्रय शक्ति कम हुई, जिससे आर्थिक मंदी की स्थिति पैदा हुई।
3. **युद्ध ऋण तथा क्षतिपूर्ति** – युद्ध ऋण तथा क्षतिपूर्ति ने भी यूरोप की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया था। इससे आर्थिक मंदी बढी।
4. **आर्थिक पुनर्निर्माण** – एशिया तथा रूस में युद्ध के पश्चात पुनर्निर्माण की नीति अपनायी गई। एशिया मे ंव्यापक रूप से विदेशी आन्दोलन चले तथा रूस में औद्योगिक क्रांति हुई, जिससे यूरोप के देशों के हाथों से विस्तृत बाजार निकल गये। परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तहस नहस हो गया।
5. **सोने का असमान वितरण** :– युद्ध के पश्चात जब अमेरिका ने ऋणों के भुगतान को माल के रूप में लेने से मना कर दिया तो संसार भर का सोना अमेरिका में जाने लगा। परिणामस्वरूप अन्य देशों में सोने के अभाव के कारण उसकी कीमत बढ गई तथा वस्तुओं के मूल्य गिर गये जिससे व्यापाक मंदी का प्रसार हुआ।
6. **न्यूर्याक स्टॉक एक्सचेन्ज में शेयरों का मूल्य गिरना** :– अमेरिका में 1929 ई में न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेन्ज में शेयरों का मूल्य एकदम गिर गया, जिसके कारण अनेक कंपनियों व व्यापारियों का दिवाला निकल गया। उधार देने व नवीन पूंजी लगाने की व्यवस्था समाप्त कर दी गई। परिणामस्वरूप यूरोप के देशों की आर्थिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई।

(किन्हीं पांच बिन्दुओं का उत्तर देने पर अंकित दिये जाएं)

उत्तर 18. मुसोलिनी ने जन सहयोग से सत्ता पर कब्जा कर लिया और इटली में फांसीवादी अधिनायकतंत्र की स्थापना कर ली। उसकी गृहनीति का प्रमुख उद्‌देश्य युद्ध और क्रांति के विनाशकारी प्रभावों से देश को बचाना तथा उत्पादन शक्ति को बढ़ाना था। उसकी गृहनीति के प्रमुख तत्व निम्न प्रकार है –

1. **मुद्रा व्यवस्था में सुधार** – जिस समय मुसोलिनी सत्तारूढ हुआ, उस समय इटली की मुद्रा व्यवस्था पतनोन्मुख थी। मुद्रा का मूल्य घट रहा था। बजट घाटे की ओर जा रहा था। उसने राज्य के व्यय में भारी कटौती करके और नये कर लगाकर बजट को संतुलित कर दिया। इससे मुद्रा का गिरता हुआ मूल्य स्थिर हो गया। देश की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ। युद्ध के दौरान इटली पर जो विदेशी

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

कर्जे का बोझ बढ़ गया था उसको कम करने में मुसोलिनी सफल हुआ।

2. **औद्योगिक व्यवस्था में सुधार** – मुसोलिनी ने यह अनुभव किया कि उद्योगों के विकास के बिना देश की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं लाया जा सकता। मुसोलिनी ने उद्योगों में भरपूर ऊर्जा के साधनों की पूर्ति की, कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया, उद्योगपतियों को पूरा सहयोग दिया, रेल सडक यातायात को बढ़ाया। इससे उद्योगो के विकास में भारी सफलता मिली। औद्योगिक उत्पादन बढाने के लिये मजदूरों की सेवा दशाओं में भी सुधार किया गया। इससे उत्पादन बढाने में सरकार को सफलता मिली।

3. **कृषि उत्पादन बढाने के प्रयत्नः**– इटली में कृषि उत्पादन की दशा भी चिंताजनक थी। सरकार ने कृषि उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न किया। दलदल सुखाये गये और उनको कृषि योग्य बनाया गया। वैज्ञानिक खाद, औजार, कृषि शिक्षा आदि के द्वारा कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। देश में कृषि विकास को प्रोत्साहन देने के लिये अनाज के आयात पर भारी कर लगा दिये, जिससे विदेशों से कम से कम अनाज देश में आये और देश का किसान आत्मनिर्भर बने। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई और इटली की विदेशो पर निर्भरता कम हुई।

4. **शिक्षा व्यवस्था में सुधार** :– मुसोलिनी ने फासीवादी सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा का पुनर्गठन कि। प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य शिक्षा के साथ–साथ फासिस्ट शिक्षा भी दी जाने लगी। आठ से चौदह वर्ष की अवस्था वाले बालको के लिये एक प्रकार की बालचर संस्था बलिला स्थापित की गई। इस संस्था में शिक्षा प्राप्त करके बालक अवान गार्डिया नामक संस्था में प्रवेश लेता था। यह संस्था चौदह से अठारह वर्ष तक के बालको के लिये होती थी। यही से निकलकर बालक फासिस्ट दल का सदस्य तथा सैनिक बनता था। मुसोलिनी ने स्त्रियों की शिक्षा का भी अच्छा प्रबंध किया।

5. **पोप के साथ समझौता** :– इटली के पोप के साथ उसका संघर्ष 1871 ई से चला आ रहा था। शक्ति को राज्य के पक्ष में करने के उद्‌देश्य से पोप के साथ समझौता करने में सफल हुआ।

मुसोलिनी से हडताल पर प्रतिबंध लगाया, मजदूरों के अधिकारों की घोषणा की, सैनिक बल में भारी वृद्धि की, नारा दिया इटली–इटली वासियों की यहूदी देश छोड़े।

अथवा

प्रथम विश्व युद्ध के निम्नलिखित परिणाम सामने आये :–

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

1. तीन राजवंशों की समाप्ति
2. मानव जीवन की हानि
3. सामाजिक परिणाम
4. आर्थिक विनाश
5. युद्ध ऋण
6. मुद्रा प्रसार
7. व्यापार की हानि
8. विश्व संस्थाओं का विकास
9. विजित राष्ट्रो से संधियां
10. लोकतंत्र के विरूद्ध प्रतिक्रिया
11. सैन्यवादी प्रकृति का प्रबल होना
12. अमेरिका के महत्व में वृद्धि
13. अल्पसंख्यको की समस्या
14. वैज्ञानिक प्रगति

(किन्हीं पांच बिन्दुओं का विस्तार देकर लिखने पर अंक दिये जाएं)

उत्तर 19 लोगो को राष्ट्रसंघ से बडी आशाये थी, किन्तु वह अपने उद्‌देश्यों की प्राप्ति में पूर्ण असफल रहा। उसकी स्थापना के तीस वर्ष भी नही बीते थे कि द्वितीय विश्व युद्ध छिड गया, जो प्रथम विश्व युद्ध से भी अधिक व्यापक तथा विनाशकारी सिद्ध हुआ। राष्ट्रसंघ की असफलता के निम्न कारण थे :–

1. **अमेरिका का असहयोग** – राष्टसंघ की स्थापना अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन की प्रेरणा से हुई थी, किन्तु अमेरिका राष्ट्रसंघ का सदस्य ही नहीं बना। इसका राष्ट्रसंघ के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यदि किसी राष्ट्र पर राष्ट्रसंघ ने आर्थिक प्रतिबंध लगाया, तो उसकी पूर्ति उसने अमेरिका से कर ली। अमेरिका के राष्ट्रसंघ से पृथक होने के परिणामस्वरूप फ्रांस और ब्रिटेन ने संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण नीतियों को अपनाकर विश्व राजनीति को दूषित कर दिया। कुछ असंतुष्ट राष्ट्र इससे अलग हो गये। फ्रांस ने अपनी सुरक्षा के लिये गुटबंदी की नीति को अपनाया, जो राष्ट्रसंघ के सिद्धांत के प्रतिकूल था।
2. **राष्ट्रसंघ के संविधान की कमजोरियां** – राष्ट्रसंघ के संविधान में भी कुछ ऐसी बाते थी जो उसकी असफलता के लिये उत्तरदायी थी। इनमें सबसे पहली कमी यह थी कि राष्ट्रसंघ के सदस्य राष्ट्र उसकी सिफारिशों को मानने के लिये बाध्य नही थे। दूसरे, राष्ट्रसंघ के पास अपने निर्णयों को लागू करवाने के लिये कोई शक्ति नही थी। तीसरे, किसी भी राज्य को अपराधी घोषित करने का निर्णय परिषद द्वारा सर्वसम्मति से करना पडता था जो कि बड़ा कठिन था। चौथे, राष्ट्रसंध के संविधान में युद्ध का पूर्ण निषेध नही किया गया था।

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

पांचवे, राष्ट्रसंघ के पास आय के पर्याप्त साधन नही थे। इन्ही सब कारणों से राष्ट्रसंघ असफल रहा।

3. **राष्ट्रसंघ एक सर्वभौम संस्था नही** :– राष्ट्रसंघ के सभी राष्ट्र सदस्य नही थे। कुछ ऐसे देश भी थे, जिन्होने बाद में राष्ट्रसंघ की सदस्यता का परित्याग कर दिया, जैसे– जापान तथा जर्मनी। धीरे–धीरे कुछ अन्य राष्ट्र भी संघ से अलग हो गये। इस प्रकार राष्ट्रसंघ कुछ ही राष्ट्रो का संगठन बनकर रह गया, जिन पर यूरोपीय देशों का प्रभाव था।
4. **वार्साय की संधि** :– राष्ट्रसंघ का जन्म वार्साय की संधि से हुआ था। वार्साय की संधि पराजित राष्ट्रो पर थोपी गई थी। अतः पराजित राष्ट्र संघ को विजेता राष्ट्रों की स्वार्थासिद्धि का साधन मानते थे और इसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। यह दृष्टिकोण विश्व शांति में बाधक था।
5. **राष्ट्रसंघ के सिद्धांतो के प्रति महाशक्तियों की अनास्था** – जिन महाशक्तियों ने राष्ट्रसंघ के मूल सिद्धान्तो में आस्था प्रकट की थी, व्यवहार में उन्होने इसको नहीं माना। वे अपने राष्ट्रों की स्वार्थपूर्ति में लगे रहें। दूसरे उन्होने सन 1933 ई में रूस को राष्ट्रसंघ का सदस्य नही बनने दिया और जब वह सदस्य बना तो फिनलैण्ड के प्रश्न को लेकर उसे राष्ट्रसंघ की सदस्यता से निष्कासित कर दिय, किन्तु इस प्रकार का दण्ड जर्मन, इटली तथा जापान को नहीं दिया गया।
6. **सदस्य राष्ट्रो की परस्पर विरोधी नीतिया** :– सदस्य राष्ट्रों की परस्पर विरोधी नीतियां भी राष्ट्रसंघ की असफलता का प्रमुख कारण था। फ्रांस चाहता था कि राष्ट्रसंघ वार्साय की संधि को कड़ाई से लागू करें। फ्रांस इसे जर्मनी को कुचलने का साधन समझता था। दूसरी ओर ब्रिटेन अपने व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये जर्मनी के प्रति उदार नीति का अनुसरण कर रहा था। जर्मनी ने यह अनुभव किया कि राष्ट्र संघ उसके हितों के विपरीत है। अतः उसने 1833 ई में राष्ट्रसंघ से त्याग पत्र दे दिया। सोवियत रूस भी राष्ट्रसंघ की नीतियों से असन्तुष्ट था, क्योंकि परिश्चमी राष्ट्रो ने साम्यवादी क्रांति को कुचलने का प्रयत्न किया था।

अथवा

1. **इंग्लैण्ड तथा अमेरिका की सामुद्रिक शक्ति** – द्वितीय विश्व युद्ध के समय तक युद्ध में वायु सेना का महत्व बढ़ गया था। उधर दूर तक पार करने वाली पनडुब्बियों ने अधिक शक्तिशाली युद्धपोतों के लिये भी खतरा उत्पन्न कर दिया था। इन सबके बावजूद इंग्लैण्ड तथा अमेरिका की सामुद्रिक शक्ति ने जर्मनी तथा जापान को हराने में

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जर्मनी की सामुद्रिक शक्ति उनसे निर्बल थी, यह भी उसकी हार का कारण था।

2. **जर्मनी का रूस पर आक्रमण :–** जर्मनी द्वारा रूस पर आक्रमण करना उसकी भारी भूल थी। वह रूस की शक्ति का सही आकलन नहीं कर सका। उसका विश्वास था कि वह एक झटके में रूस को धराशाही कर देगा किन्तु रूसी सेनाओं ने जिस वीरता, साहस का परिचय दिया, उससे जर्मनी की सेना बर्बाद हो गई। इसमें जर्मनी को भारी हानि उठानी पडी। यही से उसकी कमर टूट गई।
3. **हिटलर की कूटनीतिक अफलताएं :–** जर्मनी की पराजय का मुख्य कारण यह भी था कि हिटलर की सभी कुटनीतिक चालें असफल हो गयी। उसने अपने शत्रुओं में परस्पर फूट डालने और उन्हें एक–एक करके परास्त करने की नीति अपनाने का जो प्रयत्न किया, उसमें वह असफल रहा। इसी कारण द्वितीय विश्व युद्ध में उसकी हार हुई।
4. **अमेरिका का युद्ध में प्रविष्ट होना –** युद्ध में अमेरिका का सम्मिलित होना जर्मनी के लिये घातक सिद्ध हुआ। अमेरिका के पास अपार भौतिक साधन थे। वह स्वयं युद्ध क्षेत्र से इतना दूर था कि जर्मनी अथवा जापान किसी के लिये उस पर आक्रमण करना असंभव था। अतः वह अपनी भूमि की रक्षा की चिंता किये बिना युद्ध लडता रहा और इंग्लैण्ड तथा रूस को साज–सामान की सहायता देता रहा।
5. **इंग्लैण्ड की औपनिवेशिक शक्ति –** इंग्लैण्ड को अपने उपनिवेशों से अपार सहायता मिली। यही कारण था इंग्लैण्ड इतने लंबे समय तक युद्ध में डटा रहा। हिटलर ने उसे कुचलने की कोशिश की किन्तु असफल रहा।
6. **यूरोप के अधिकृत देशों में छापामार संघर्ष –** यद्यपि हिटलर ने समस्त यूरोप को तथा रूस को एक बड़े भाग को जीत लिया था, किन्तु वह उन क्षेत्रों की जनता को न तो अपना मित्र बना सका और न शक्ति के द्वारा ही उनके विद्रोह को कुचल सका। यूरोप के सभी जीते हुए प्रश्नों की जनता हिटलर की सेनाओं के विरूद्ध छापामार लड़ाई चलाती रही, जिससे जर्मनी को जन–धन की भारी हानि उठानी पड़ी।
7. **विश्व का लोकमत जर्मनी के विरूद्ध –** द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने से पहले ही विश्व जनमत जर्मनी तथा इटली की फासीवाद तानाशाही के विरूद्ध हो चुका था। रूस पर आक्रमण के बाद तो उनके खिलाफ जनता की घृणा बहुत बढ़ गई। इसके परिणामस्वरूप उपनिवेशों की जनता स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने लगी। वह फासीवाद को साम्राज्यवाद से भी अधिक घातक मानती थी। लोकमत

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

समझने लगा कि फासीवाद मानव स्वतंत्रता के लिये घातक है उसका कहर शत्रु है।

(किन्हीं पांच बिन्दुओं पर उत्तर देने पर अंक दिये जाएं)

उत्तर 20 यह कथन सत्य है कि अशोक विश्व के महान्तम शासकों में से एक है और आज तक उनके समान दूसरा सम्राट का उदाहरण इतिहास में नही है। अशोक मानव सभ्यता का अग्रदूत, समाज सेवक तथा भारतीय इतिहास का चमकता हुआ सितारा है। उसने अपने प्रजा की भौतिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक प्रगति करने का प्रयत्न किया। उसने वसुधैव कुटुम्बकम् की ज्योति जलाई। इतिहासकार स्मिथ ने अशोक की महानता के विषय में लिखा है ''अशोक एक महान सम्राट था। यदि वह योग्य न होता तो वह अपने विशाल साम्राज्य पर 40 वर्ष तक सफलतापूर्वक शासन न कर सकता और ऐसा नाम न छोड गया होता जो दो हजार वर्ष के व्यतीत हो जाने के बाद भी लोगो की स्मृति में ताजा बना है। अशोक की महानता की विवेचना निम्न प्रकार की जा सकती है।

1. **एक महान विजेता के रूप में हृदय परिवर्तन** :– अशोक एक महान विजेता था। कलिंग युद्ध में विजय से यह बात सिद्ध जो जाती है। विश्व में ऐसा कोई सम्राट नही हुआ, जिसका अपनी ही जीत के बाद हृदय बदल गया हों। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने युद्ध को सदैव के लिये तिलांजलि दे दी और धर्म प्रचार को अपना लक्ष्य बनाया। यह अशोक की महानता का साक्षात प्रमाण है।
2. **महान शासक** :– अशोक ने प्रशासन के क्षेत्र में जिस त्याग, बलिदान, दानशीलता तथा उदारता का परिचय दिया, वह मानव को अपना नैतिक स्तर ऊंचा उठाने की प्रेरणा देती है। अशोक ने वास्तव में अपनी प्रजा को सन्तानवत समझा और उसके मानसिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक सुख की समृद्धि के लिये प्रयत्न किया। उसने अपनी संपूर्ण शक्ति प्रजा के हित में लगा दी।
3. **महान धार्मिक तथा प्रचारक** :– कलिंग युद्ध की भीषणता ने अशोक को बौद्ध धर्म का अनुयायी बना दिया किन्तु उसके धर्म में संकीर्णता नही थी। उसने जिन सिद्धान्तों का प्रचार किया वे किसी धर्म विशेष के सिद्धान्त नही थे बल्कि उसे प्रत्येक जाति, धर्म तथा देश का व्यक्ति अपना सकता था। उसने अपने धर्म मन, वचन, कर्म की पवित्रता तथा चरित्र की शुद्धता पर बल दिया। अंहिसा तथा सहिष्णुता उसके धर्म की विशेषता थी। अशोक ने अपने साम्राज्य की शक्ति धर्म के प्रचार में लगा दी। बौद्ध धर्म को उसने विश्व धर्म के रूप में बदल दिया। उसने देश विदेश में प्रचार हेतु शासन की ओर से प्रबंध कि। उसने मठो तथा

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com
http://www.mpboardonline.com

शिलालेखों का निर्माण किया। धर्म महामात्रों की नियुक्ति थी। धाार्मिक उत्सव, समारोह तथा सम्मेलनों का आयोजन किया।

4. **विश्व शान्ति का अग्रदूत** :– कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने सत्य, सत्कर्म, सद्भावना तथा सद्व्यवहार के द्वारा लोगो के हृदय पर विजय करके विश्व शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया। विश्व के अधिकांश शासक अपनी समस्याओं को युद्ध द्वारा ही सुलझाये रहें है किंतु अशोक विश्व का पहला शासक था जिसने वसुधैव कुटुम्बकम का पाठ पढ़ाया और युद्धो का सदैव के लिये त्याग करके स्थायी सुख तथा शांति की स्थापना करना अपना मूल उद्देश्य बनाया। उसका विचार था कि विश्वास देकर विश्वास प्राप्त कियाा जा सकता है। इस कारण उसने अपने देशवासियों की तरह ही विदेशों में जनता की भलाई के लिये ही कार्य किये। इससे अशोक ने उन्हें अपना विश्वासपात्र तथा मित्र बनाया।

निष्कर्ष :– उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अशोक एक महान सम्राट था। एच.जी. वेल ने लिखा है ''इतिहास के पृष्ठ सहस्त्रों राजाओं–महाराजाओ के नामो से भरे पडे है। उन सब में अशोक का नाम अकेले ही तारे की भांति चमकता है। वोल्गा से लेकर जापान तक अब भी उसका नाम सम्मानीय है। चीन, तिब्बत तथा भारत में उसकी महानता की परम्पराएं चली आ रही है। कांस्टेन्टाइन तथा शलिमैन का नाम जितने मनुष्यों ने सुना होगा, उससे कही अधिक जीवित स्त्री पुरूष आज अशोक की स्मृति को हृदय में रखते है।

अथवा

1. **यूनान में दासों की बाढ़** – पांचवी शताब्दी ई.पूं. में यूनान में दासों की मानो बाढ ही आ गई थी। उनकी संख्या पहले के मुकाबले कही ज्यादा हो गई थी। अधिकांश दास युद्धो में मिलते थे। युद्धबंदियो को ही नही, शत्रु देश में पकड़ी गई स्त्रियों तथा बच्चों को भी दास बना लिया जाता था। एशिया कोचक पर एथेन्स के एक आक्रमण के दौरान ही 20 हजार से ज्यादा लोगो को पकड़कर दास बनाया गया था। समुद्री डाकू भी, जिन्हें पाईरेंटस कहते थे, खुले सागर में व्यापारिक पोतो पर या तटवर्ती बस्तियों पर हमले करके लोगो को पकड़ लेते थे और दासों की तरह बेच देते थे। दासों का आयात भी किया जाता था। दास का बच्चा भी दास बनता था यूनान में अधिकांश दास विदेशी थे।
2. **छासो की मण्डियां** – लगभग सभी यूनानी नगरों में दासो की मण्डियां लगती थी। वहां मर्दो, औरतो और यहां तक कि नन्हे–नन्हें बच्चों को भी खरीदा –बेचा जाता था। दास के सीने पर एक तख्ती लटकी होती थी, जिस पर लिखा रहता था कि वह किस देश या जाति का है, आयु कितनी है और क्या क्या काम कर सकता है। ग्राहक इस जिंदा माल को

http://www.mpboardonline.com
www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

खूब देखभाल कर उसकी मांस पेशियां भली–भांति टटोलकर तथा उसकी भार उठाने, दौडने, कूदने जैसी पीरक्षायें लेकर ही खरीदते थे।

3. **दासो के काम** :– यूनान में सबसे अधिक दास उन प्रदेशों में थे जहां पत्थर और धातुओं की खाने थी या शिल्प काफी विकसित थे। यूनानी सबसे भारी काम दासों से करवाते थे। खनिज धातु और संगमरमर दास ही निकालते थे। व्यापारिक पोतो पर भारी–भारी डांड चलाने का काम भी दास मल्लाहो से कराया जाता था। मिट्टी के बर्तन बनाने, कृषि तथा घरेलू कार्य भी दास ही करते थे।

4. **दासो को सजा** :– दासो से डरा–धमका कर या सजा देकर ही काम करवाया जा सकता था। दासों से निरीक्षकों की निगरानी में काम करवाया जाता था। ज्योही कोई सुस्ताने के लिये काम में ढिलाई दिखाता निरीक्षक उस पर कोडो की वर्षा कर देता। कोडो की नोंक पर आमतौर पर सीसे का डला बंधा होता था। शायद ही कोई दास ऐसा होता था कि जिसकी पीठ कोडे की मार के निशानों से ढकी न हो। एक तत्कालीन लेखक ने मालिक द्वारा दासों को दी जाने वाली यन्त्रणाओं का जो वर्णन किया है, उसे पढ़कर रोंगटे खडे हो जाते है ''कोडे से पीटो, गला घोंटो, कुचलो, आग से झुलसाओं, लतियाओं, हाथ–पैर मरोडो, चाहो तो नाक में सिरका डालो, पेट पर ईंटो का बोझ रखों, जो चाहे करो''

5. **दासो का अपने मालिको से संघर्ष** :– दास अपने स्वामियों को नुकसान पहुंचाने का कोई मौका नही चूकते थे। वे काम के औजार तोड डालते थे, जानवरों को अपंग बना देते थे। काम में हर तरह से कोताही करते थे। प्रायः वे भागने का प्रयास करते थे, यद्यपि वे भली–भांति जानते थे कि पकड़े जाने पर उन्हें असह्रदय यन्त्रणायें दी जायेंगी। बहुत बार वे अपने निर्दयी स्वामियों को पकड़कर मार डालते थे। कभी–कभी वे विद्रोह भी कर बैठते थे। एक बार स्पार्टा में भयंकर भूचाल आया और काफी विनाश हुआ। इस अवसर का लाभ उठाकर दासों ने मालिको पर हमला कर दिया और बहुत से मालिक मारे गये। इस विद्रोह को कुलने के लिये अन्य नगर राज्यों से सहायता लेनी पड़ी। फिर भी इस विद्रोह में अनेक दास स्वतंत्र हो गये।

उत्तर 21. **वार्साय संधि के दोष** :–

1. **आरोपित संधि** :– यह विजेताओं द्वारा पराजित राष्ट्रो पर थोपी गई संधि थी। संधि की शर्ते आपसी बातचीत द्वारा तय नही हुई थी। जर्मनी को धमकी देकर इसकी शर्ते स्वीकार करवाई गई थी।

2. **अपमानजनक संधि** :– संधि की शर्ते जर्मनी के लिये बहुत ही अपमानजनक थी। जर्मनी के बहुत से प्रदेश उससे छीनकर अलग कर दिये गये थ। संधि की शर्ते ऐसी थी कि उनको न तो कोई राष्ट्र

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

स्वीकार कर सकता था, न पालन। सार और ऊपरी साइलेशिया का छिन जाना, जर्मनी का दो भागो में विभाजित हो जाना अपमानजनक था। इसलिये स्वाभाविक था कि वह युद्ध द्वारा भविष्य में अपने अपमान को धोने का प्रयास करे, जैसा हिटलर ने किया।

3. **यूरोप का बाल्कनीकरण** :– कार्बिन ने लिखा है कि पेरिस सम्मेलन की व्यवस्था का एक परिणाम यूरोप का बाल्कनीकरण था। जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व बाल्कन प्रदेश में छोटे–छोटे राज्यों को स्थापित किया गया उसी प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी की पूर्वी सीमा पर पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, एस्टोनिया, लेटनिया, लिथुआनिया जैसे छोटे राज्य स्थापित किये गये। ये राष्ट्र आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से कमजोर थे। इन राज्यों ने अल्पमत की समस्या को जन्म देकर यूरोपीय राष्ट्रो के बीच द्वेष और कटुता की भावना को बढ़ा दिया और इसी ने अंत में जर्मनी की आक्रमक प्रवृत्तियों को बढावा दिया।

4. **कठारे शर्ते** :– सन्धि की शर्ते जर्मनी के लिये कठोर थी। जर्मनी की 1/8 भूमि का भाग तथा 70 लाख आबादी उससे अलग हो गई। उसके उपनिवेश छीन लिये गये। उस पर भारी हर्जाना लाद दिया गया। उसकी सैनिक संख्या सीमित कर दी गयी। रॉबिन ने लिखा है एक निर्णायक युद्ध के पश्चात जितनी संधियां अब तक पराजित राष्ट्रो पर लादी गयी है उनमें यह सबसे अधिक कठोर थी।

5. **प्रतिशोधात्मक सन्धि** :– यह संधि प्रतिशोध की भावना से की गई थी। इसमें एक ही सिद्धान्त का पालन किया गया। वह था विजेता राष्ट्रो का विजित राष्ट्रो की भूमि पर पूर्ण अधिकार है और मित्र राष्ट्र ही विजेता है। जर्मनी ने शिकायत की थी कि इसमें विल्सन के सिद्धान्तों की उपेक्षा की गई है और संधि का एकमात्र उद्देश्य जर्मन जनता का आर्थिक शोषण करना और इन्हें गुलाम बनाना है। फ्रांस के प्रधानमंत्री क्लीमेंशों ने कहा था अब हमें बदला लेने का मौका मिल गया है।

6. **दूसरे विश्व युद्ध का बीजारोपण** :– जर्मनी को युद्ध का उत्तरदायी ठहराया जाने के कारण उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची। जर्मन जनता इस प्रकार की अपमानजनक, विद्वोषपूर्ण और अन्यायपूर्ण संधि को मानने के लिये तैयार नही थी। इसलिये हिटलर ने सत्ता में आते ही इनकी अवलेहना करना आरम्भ कर दिया जिसका परिणाम दूसरा विश्व युद्ध था। फ्रांस ने काह था ''यह कोई संधि नही है। यह केवल 20 वर्ष के लिये युद्ध विराम है'' यह सिद्ध हुआ।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

अथवा

1. **संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रस्तावना** :– संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर में 19 अध्याय, 111 धाराएं (अनुच्छेद) एवं लगभग 10,000 शब्द हैं
इसकी प्रस्तावना में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्य इस बात का निश्चय करते है कि हम आने वाली पीढ़ियो को युद्ध की मुसीबतों से बचायेंगे जो हमारे जीवन में दो बार मानवता को अपार कष्ट दे चुकी है। हम मानव के बुनियादी अधिकारो, मानव का गौरव, उसका मूल्य तथा स्त्री–पुरूष तथा छोटे–बड़े राष्ट्रो के समान अधिकारों के विषय में अपने विश्वासो को दोहराते है। हम न्याय के लिय वातावरण तैयार करेंगे। ताकि सन्धियों और अन्तर्राष्ट्रीय कानून से उत्पन्न हाने वाले कर्तव्यों का पालन किया जा सके। हम अच्छे पडोसी की तरह शांति से मिल जुल कर रहेंगे और अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सूरक्षा की स्थापना के लिये अपनी शक्ति संगठित करेंगे।
2. **संयुक्त राष्ट्रसघ के उद्देश्य** :– संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर की धारा 1 में इसके निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य घोषित किये गये थे।
   (i) अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाये रखना और सदस्य राष्ट्रों में मैत्री को बढ़ावा देना।
   (ii) राष्ट्रो की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से कार्य करें।
   (iii) मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता का सम्मान करना।
   (iv) इस समान लक्ष्यों की पूर्ति के लिये ऐसे संगठन स्थापित करना जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करें।
3. **संयुक्त राष्ट्रसंघ के सिद्धान्त** :– संयुक्त राष्ट्रसंघ के सिद्धान्त निम्नलिखित है।
   (i) संयुक्त राष्ट्रसंघ के सभी सदस्य सार्वभौम तथा समान हैं
   (ii) सभी सदस्य राष्ट्र संयुक्त राष्ट्रसंघ के नियमों का पालन करेंगे।

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com

http://www.mpboardonline.com

(iii) सभी सदस्य राष्ट्र अपने पारस्परिक झगडों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करेंगे जिससे शांति, सुरक्षा और न्याय के भंग होने का भय न हो।

(iv) कोई भी सदस्य राष्ट्र किसी की प्रादेशिक अखण्डता एवं राजनीतिक स्वतंत्रता के विरूद्ध कोई भी ऐसा कार्य नही करेगा। जिससे उस राष्ट्र एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ का अपमान होता हो।

(v) संयुक्त राष्ट्रसंघ इस बात का प्रयत्न करेगा कि जो देश सदस्य नही है, चार्टर के सिद्धान्तों का पालन करें।

(vi) संघ किसी भी राष्ट्र के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देगा।

(vii) संयुक्त राष्ट्र संयुक्त राष्ट्रसंघ को उन कार्यो में सहायता देंगे, जिन्हें वे अपने सिद्धान्तों के अनुसार करेंगा। सदस्य राष्ट्र उस देश को सहायता नही देंगे, जिनके विरूद्ध संघ कार्यवाही करेगा।

——————————

http://www.mpboardonline.com

www.mpboardonline.com